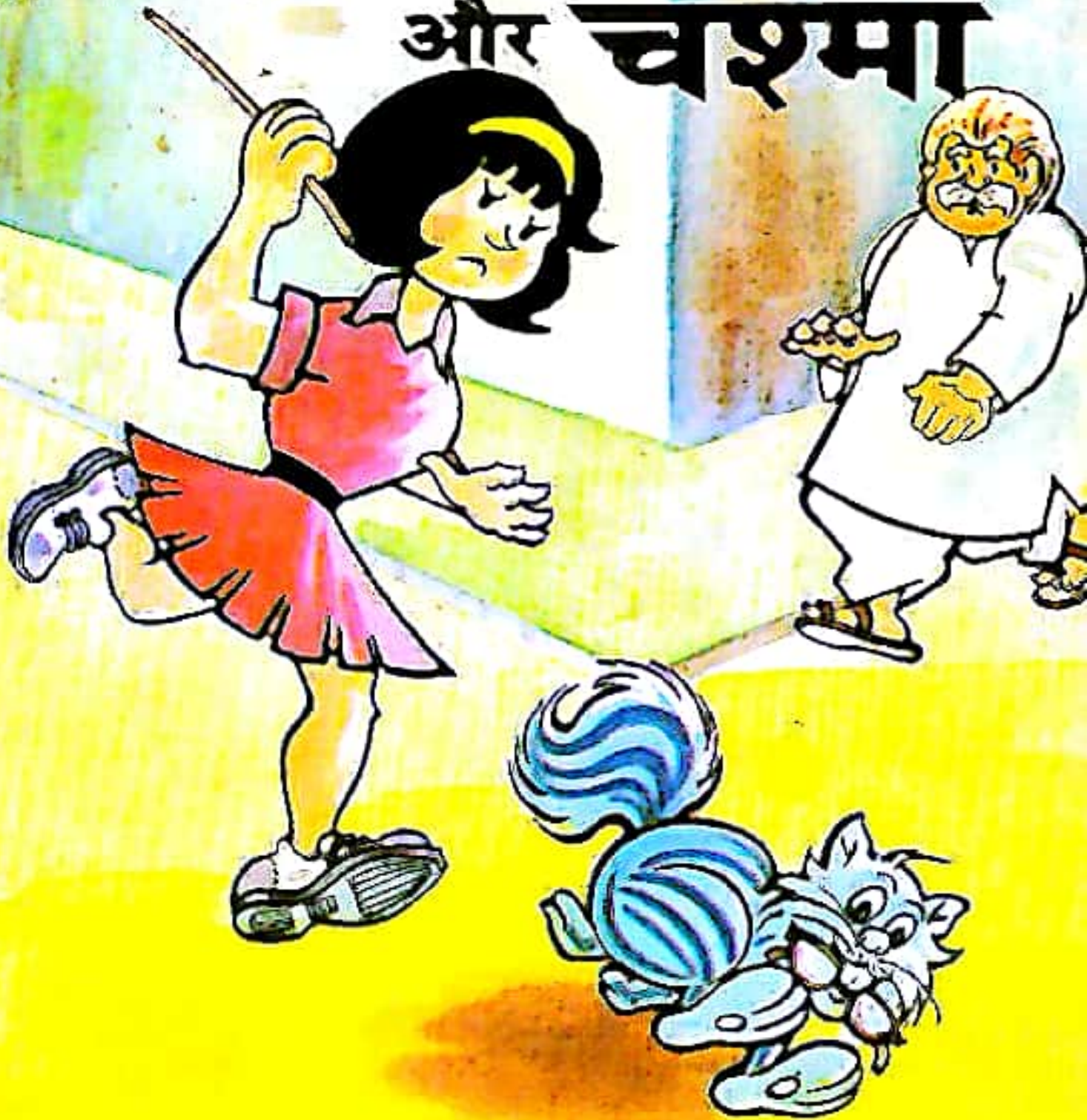




Diamond  
Comics

D-1354

# प्रा० पिंकी और चश्मा





प्रा०।

पिंकी

और चश्मा

दादाजी! आप क्या दूँद रहे हैं?

अपना चश्मा! मुझे अस्वचार पढ़ना है.



वह तो कुटकुट गिलहरी के पास है.



पिंकी! तुम्हारी कुटकुट हमेशा मेरे लिए कोई न कोई मुसीबत खड़ी कर देती है.



TITLE PINKI AND THE CHARACTER ARE COPYRIGHT REGISTERED BY GOVERNMENT OF INDIA FOR THE PROPRIETORS. PLEASE FEATURE A. M. NARAYANAN, IN WHICHE REPRODUCTION OF ANY PART OF THIS BOOK IS STRICTLY PROHIBITED. NO ACTUAL PERSON IS NAMED OR DELINEATED IN THIS FICTION COMIC. ANY SIMILARITY TO REAL HUMAN BEING OR PLACE IS PURELY COINCIDENTAL.

कुटकुट ! चश्मा  
वापस करो.



उसे पकड़ो. कहीं चश्मा  
दूट न जाए.

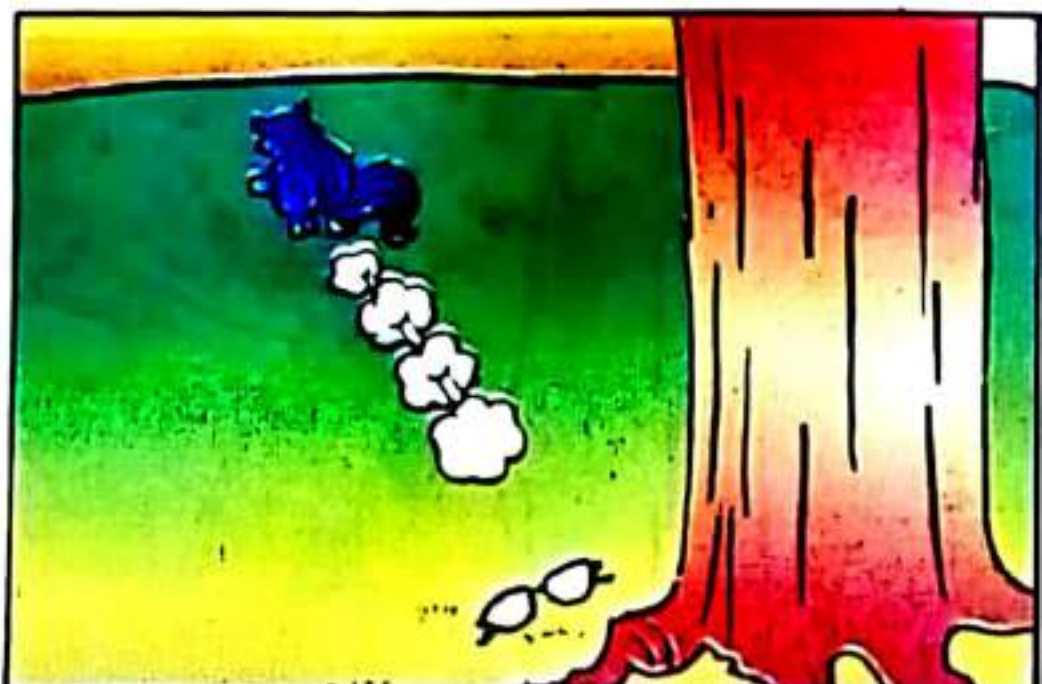
कुटकुट!  
सको.



अगर तुमने चश्मा नहीं  
दिया तो तुम्हें दूध-रोटी  
नहीं मिलेगी.







आखिर चश्मा  
मिल ही गया.

और साथ में  
ढेर सारे मीठे  
जामुन.



चश्मा मिल गया.

हां!

और गठरी  
में क्या  
है?

मीठे जामुन! आज  
हम सब खाएंगे.









पिंकी! बताओ मेरी  
मुट्ठी में क्या है?



अगर तुम सही  
बता दो तो जो  
कुछ मुट्ठी से  
निकलेगा वह  
तुम्हारा नहीं तो  
तुम अपनी टॉफी  
मुझे दोगी.



नट्टू! तुम्हारी  
मुट्ठी खाली  
है!



हां, यह तो खाली ही है!



पिंकी! तुम्हें  
कैसे पता चला  
कि मेरी मुट्ठी  
खाली है?



अगर उसमें  
कुछ होता  
तो तुम  
जोसम  
न लेते.





हा! हा!! यह बास्केट-  
बाल की टोकरी है.



खेलोगी?



नहीं! तुम लम्बे  
हो जीत जाओगे  
और हारने वाला  
खेल मैं नहीं  
खेलती.



पिंकी! क्रिकेट  
खेलोगी?



परंतु मैं  
पहले बैटिंग  
करूंगी.











# कविता और संगीत



मम्मी! देखना, मैंने यह कविता कैसी लिखी है?

बेटी! अभी मैं खाना बनाने में व्यस्त हूँ. जाओ, अपने पापा को कविता दिखा दो.



पापाजी! जरा मेरी कविता पढ़ना.

पिकी! मैं अभी फोन पर इम्पोर्टेंट बात कर रहा हूँ.



आप क्या पढ़ रहे हैं?

कविता!

अगर आप वह  
कविता पढ़ सकते  
हैं तो यह क्यों नहीं?

क्योंकि यह कविता  
रवीन्द्रनाथ टैगोर  
की है, किसी  
नौसीखिए  
की नहीं.



अपटजी! जरा  
मेरी नई कविता  
पढ़ना.

एक शर्त पर

क्या?

तुम मेरा गाना  
सुनाओगी.

मैं तुम्हारा  
बेसुरा संगीत  
बदलित नहीं  
कर सकती.



पापा! यह पटाखा  
चला दो!



किसी और दिन.  
आज दीवाली के  
दिन मुझे दूसरे  
बहुत काम  
हैं...



आज कई लोग मुखास्काद  
कहने आएंगे. उनकी  
स्वातिर करनी  
होगी.



कुटकुट! आओ, किसी और के पास  
चलो.









चलो, कुटकुट! किसी और को दूँटे.



नट्टू! क्या तुम मेरा यह पटाखा चला दोगे?

क्यों नहीं?



पिंकी! कानों में ऊँलियां क्यों डाल ली? क्या धमका सुनना नहीं चाहती?

मैं इस सिर्फ देखंगी.

हैं?? बम चला नहीं!





अंकल! आपका  
कहाँ जाना  
है?



मैं कुंदनलाल हूँ आज  
मुम्बई से आया हूँ.  
चमनलाल का  
घर कौनसा  
है?



आइए मेरे  
साथ.

आंटी! यह कुंदनलाल  
जी चमन अंकल के  
दोस्त उनसे मिलने  
आए  
हैं.



आइए, तशरीफ  
लाइए.





दोस्त? मैं तो इनका  
जानता तक नहीं।

तुम मुझे किसके घर ले आई?  
मुझे चमनलाल ढींगरा के घर  
जाना था.

तो ऐसा  
कहते. यह तो  
चमनलाल पुरी  
हैं.

चमनलाल ढींगरा तो  
सो ब्लॉक में रहते हैं.  
आइए  
चलें.

